

class - B.A Part - I

Sub - Hindi (Hon) Paper - I

Written by Rakesh Kumar

R.B.G.R college Mahavijaypur

① आदिकालीन साहित्य की प्रमुख
उपलब्धियों पर प्रकाश डालें।
उत्तर- हिन्दी साहित्य के इतिहास का
यह काल जिस 'आदिकाल' के नाम
से जाना जाता है, भाषा और
साहित्य की दृष्टि से पर्याप्त
संपन्न है। उसकी समस्त देन
का अभी तक सम्यक् मूल्यांकन नहीं
हो सका है, क्या कि विद्वान् धर्म-
शेखर एवं भाषा के विवादों
में उलझे रहे हैं। कई ऐसी
उपलब्धियाँ सामने आती हैं जिनका
पूर्ववर्ती साहित्य पर अपार प्रभाव
है। यहाँ उनपर भाषा और साहित्य
की दृष्टि से निम्न रूप में विचार
किया जा रहा है।

भाषारूप और सम्प्रयोग हमारा
आदिकाल में हिन्दी भाषा साहित्यिक
अपभ्रंश के साथ-साथ चलती हुई
क्रमशः जन भाषा के रूप में
साहित्य रचना का माध्यम बन
रही थी। समस्त आदिकाल में यह
दो भाषाओं की समानांतर रचना
प्रक्रिया चलती रहने से अधिकंश
विद्वान् गंभीरपूर्वक विचार करके
दोनों भाषाओं के साहित्यों को
अलग-अलग करने का अवसर नहीं
पा सके। फल यह हुआ कि कभी
अपभ्रंश के नाम पर भी हिन्दी का

आरंभिक साहित्य ही त दिया गया -
हो और कभी पुरानी हिन्दी के
नाम पर अपभ्रंश का परवर्ती
साहित्य भी हिन्दी साहित्य में
सम्मिलित कर लिया गया
जब भाषा का रूप और साहित्य
ही अपनी सीमाएँ नहीं बना
सका था तब उसकी सम्प्रेषण -
क्षमता की जांच कैसे होती।
किंतु नयी खोजों से अब यह
धारणा स्पष्ट हो चुकी है कि
जन भाषा के रूप में हिन्दी
आठवीं शताब्दी में ही साहित्य
का माध्यम बन चुकी थी
तथा वह अपभ्रंश भाषा के साथ
अपनी भूमि पर आगे भी बढ़ने
लगी थी। फलतः अपभ्रंश में
साहित्य लिखने वाले कवि अवसर
पा कर हिन्दी में भी कविता
किया करते थे। दोनों भाषाओं
में यह स्पर्धा ऐतिहासिक
आरंभ तक चलती रही और अंत
में एक दिन ऐसा भी आया
जब अपभ्रंश का रूतमा छोड़कर
सही कवि हिन्दी के मार्ग पर
अग्रसर हो गया। आविका लीन
साहित्य में प्रयुक्त हिन्दी की
यह बहुत बेड़ी शक्ति है जो
उसकी सम्प्रेषण क्षमता की सूचना
देती है। एक विशाल क्षेत्र की
अनेक को लियो से उसका एक
सामान्य रूप निकसता है।